Q. पिडियाट्रिक नर्सिंग की परिभाषा समझाते हुए इसके नवीन ट्रेन्डस व प्रिसिपल के बारे में लिखिये।

Define paediatric nursing. Write principles and trends of paediatric nursing.

Ans. ■ पिडियाट्रिक नर्सिंग :-

ये नर्सिंग की वह विशेषीकृत शाखा है जिसमें नवजात शिशुओ, बच्चो व किशोर आयु वर्ग को नर्सिंग देखभाल तथा अन्य सेवाएं प्रदान की जाती है।

This is a specialized branch of nursing in which nursing care and other services are provided to newborns, children and adolescent age groups.

नवीन ट्रेन्डस (trends in paediatric nursing) :-

- चोटरहित देखभाल(non-injury care)
- परिवार आधारित देखभाल(family based care)
- महिला सशक्तिकरण व आर्थिक समस्याएं घटाना(Women empowerment and reducing economic problems)
- Evidence based practice (EBP)
- उचित तकनीक देखभाल(proper care technique)
- बच्चो हेतु उत्तम वातावरण (child oriented environment)

■ Child health nursing के सिद्धान्त :-

nursinggyan.com

पिडियाट्रिक नर्सिंग / child health nursing के तीन प्रमुख प्रिन्सीपल है :-

There are three main principles of Pediatric Nursing / Child Health Nursing:-

• बच्चो से संबंधित

• परिवार से संबंधित

• नर्सिंग प्रेक्टिस से संबंधित

• related to children

• family related

• related to nursing practice

1. बच्चो से संबंधित (Related to children):-

• प्रत्येक रुग्ण शिशु को unique मान कर देखभाल करे।

• प्रत्येक बच्चे का वृद्धि व विकास उसके जैनेटिक कारको, वातावरण (परिवार / समाज) की अन्तर्क्रिया का परिणाम है।

• बच्चे का बीमारी के प्रति रेस्पोन्स उसके विकास स्तर, आयु, अनुभवों, पर निर्भर करता है।

• जहां तक हो सके बच्चो को traumatic तरीके से देखभाल प्रदान करे।

• Take care of every sick child considering it unique.

• The growth and development of every child is the result of the interaction of his genetic factors and environment (family/society).

nursingguyan.com

• The child's response to illness depends on his developmental level, age, and experiences.

• Provide non-traumatic care to children as far as possible.

2. परिवार से संबंधित(Related to family) :-

• बालक / शिशु का रुग्ण होना न केवल बच्चे बल्कि परिवार के सभी सदस्यो विशेषतः माता-पिता हेतु एक प्रमुख तनाव है।

• अतः बालक की नर्सिंग देखभाल में परिवार के सदस्यो को सम्मिलित करे।

• भर्ती बच्चे की देखभाल के साथ ही परिवार (माता-पिता) को सपोर्ट भी प्रदान करे।

• देखभाल के दौरान परिवार की धार्मिक-सांस्कृतिक विश्वासो का ध्यान रखे।

• Illness of a child/infant is a major stress not only for the child but also for all the family members, especially the parents.

• Therefore, involve family members in the nursing care of the child.

• Along with taking care of the admitted child, it should also provide support to the family (parents).

• Keep in mind the religious-cultural beliefs of the family during care

3. नर्सिंग प्रेक्टिस संबंधित (Nursing practice related):-

• पिडियाट्रिक नर्सिंग शाखा का प्रमुख ध्येय बच्चे, के स्वास्थ्य स्तर को उन्नत करना है।

• नर्सिंग देखभाल के साथ बच्चे की अन्य developmental needs पर ध्यान दे।

nursingguyan.com

• पिडियाट्रिक नर्सिंग प्रेक्टिस के दौरान 'family-child' को यूनीट माना जाता है।

• देखभाल में inter-disciplinary approach का प्रयोग करे। संक्षेप मे पिडियाट्रिक नर्सिंग के तीन प्रमुख प्रिन्सीपल है :-

• The main objective of the Pediatric Nursing branch is to improve the health level of the child.

• Along with nursing care, pay attention to the child's other developmental needs.

• During pediatric nursing practice, 'family-child' is considered as a unit.

• Use inter-disciplinary approach in care. In brief there are three main principals of pediatric nursing:-

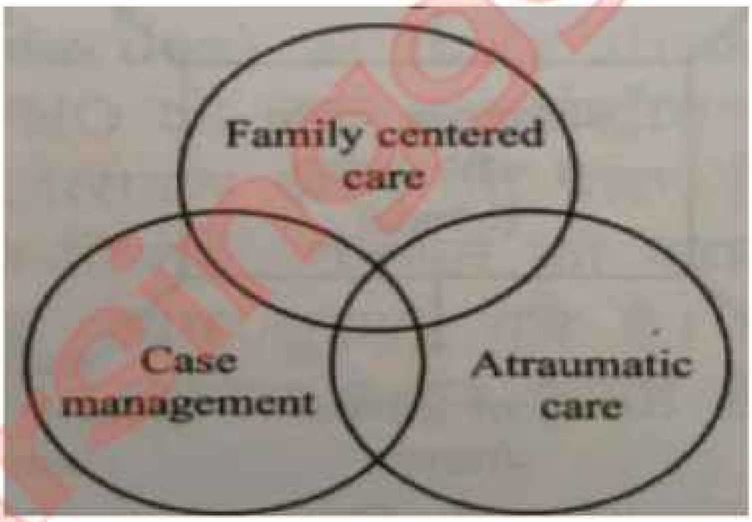

Q. पीडियाट्रिक नर्सिंग से संबंधित उभरती चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

Explain the emerging challenges related to child health care.

उत्तर - पीडियाट्रिक नर्सिंग की उभरती चुनौतियाँ (Emerging challenges of child health care)

nursingujan.com

भारत में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (National Health Policy) को अधिक विकसित किया जा रहा है, ताकि बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल ठीक ढंग से की जा सके।

बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित तीन प्रकार की प्रमुख समस्याएँ हैं-

The National Health Policy is being developed more in India, so that the health of children can be taken care of properly. There are three main types of problems related to children's health-

1. जनसंख्या विस्फोट (Population Explosion)

2. गरीबी (Poverty)

3. पर्यावरण (Environment)

देश की मुख्य रूप से संपत्ति यहाँ के रहने वाले बच्चे होते हैं, इसलिए बच्चों के लिए स्वास्थ्य योजनाएँ व प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमों को अधिक महत्व प्रदान किया जा रहा है।

इन कार्यक्रमों के द्वारा टीकाकरण, पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के क्लीनिक, पोषक आहार कार्यक्रम, परामर्श एवं मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ पहुँचाया जाता है।

हमारे देश में प्रत्येक दस हजार बच्चों में से 60-70 बच्चों की मृत्यु एक वर्ष की आयु में ही हो जाती है।

40 प्रतिशत बच्चों की मृत्यु पाँच वर्ष से कम आयु में हो जाती है।

पूरे विश्व में करीब 40 मिलियन बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं, 2.5 मिलियन बच्चे विटामिन 'ए' की कमी से होने वाली बीमारियों से ग्रसित हैं।

The main wealth of the country is the children living here, hence more importance is being given to health schemes and

nursinggyan.com

reproductive and child health programs for children.

Through these programs, health services are provided to children through vaccination, clinics for children under five years of age, nutritious food programs, counseling and mental health services.

In our country, out of every ten thousand children, 60-70 die before the age of one year. 40 percent of children die under the age of five.

Around 40 million children across the world are suffering from malnutrition, 2.5 million children are suffering from diseases caused by Vitamin A deficiency.

Q. भारत की राष्ट्रीय बाल नीति के सिद्धान्त (Principles of India's National Child Policy) -

भारत की राष्ट्रीय बाल नीति के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं-

Principles of India's National Child Policy - Following are the main principles of India's National Child Policy-

1. सभी बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छे स्वास्थ्य कार्यक्रमों को चलाना तथा अच्छी सेवाएँ व पोषक आहार उपलब्ध कराना।

2 गर्भवती महिलाओं और माताओं की स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए पोषक आहार उपलब्ध कराना।

3. जो बच्चे विद्यालय जाकर शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहे हैं, उनको विद्यालय के बाहर ही शिक्षा की व्यवस्था करना।

4. सभी विद्यालयों व सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों पर मनोरंजन की गतिविधियों को बढ़ावा देना।

nursingyan.com

5. अत्यधिक कमजोर वर्गों के बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रमों का संचालन करना।

6. बच्चों को शोषण से बचाने के लिए नीतियां बनाना।

7. अनेक प्रकार के खतरे वाले कार्यों और व्यवसायों पर प्रतिबंध लगाना।

8. चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करना।

9. शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए उपचार, शिक्षा व पुर्नवास उपलब्ध कराना।

10. किसी भी प्राकृतिक आपदा के दौरान बच्चों को सुरक्षा प्रदान करना।

11. कमजोर गरीब वर्ग के प्रतिभाशाली बच्चों के लिए मदद उपलब्ध कराना।

12. कमजोर वर्ग के मेधावी व विशेष प्रतिभाशाली बच्चों को प्राथमिकता प्रदान करना।

13. बच्चों की चिकित्सीय एवं नर्सिंग देखभाल की समस्याओं को कम करने में सहायता करना तथा उनके पारिवारिक सूत्रों को मजबूत करना और आस-पास चिकित्सा उपलब्ध कराना।

1. To run good health programs and provide good services and nutritious food for the health of all children.

2. To provide nutritious food to take care of the health of pregnant women and mothers.

3. To make arrangements for education outside the school for those children who are not getting education by going to school.

4. To promote entertainment activities in all schools and community health service centres.

5. To conduct several programs for children belonging to extremely weaker sections.

nursinggyan.com

6. Making policies to protect children from exploitation.

7. To ban various types of hazardous activities and occupations.

8. To arrange free and compulsory education for children below fourteen years of age.

9. To provide treatment, education and rehabilitation for physically handicapped children.

10. To provide safety to children during any natural disaster.

11. To provide help to the talented children of weaker sections.

12. To give priority to brilliant and specially talented children of weaker sections.

13. To help in reducing the problems of medical and nursing care of children and to strengthen their family bonds and to provide medical care in the vicinity.

Q. रोकथाम पीडियाट्रिक से आप क्या समझते हैं?

What do you understand with preventive pediatrics?

उत्तर- रोकथाम पीडियाट्रिक (Preventive Pediatrics)

अनेक प्रकार की बीमारियों को रोकने के लिए और बच्चों के शारीरिक (physical), मानसिक (mentally), एवं सामाजिक कल्याण (social welfare) को प्राथमिकता देना, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सके रोकथाम पीडियाट्रिक कहलाती है।

रोकथाम पीडियाट्रिक्स की अवधारणा को समझने के लिए मुख्य रूप से दो बातों को समझना आवश्यक है-

nursingyan.com

Preventive Pediatrics to prevent many types of diseases and to give priority to the physical, mental, and social welfare of children, so that the health of children can be improved. Is called pediatric.

To understand the concept of prevention paediatrics, it is necessary to understand mainly two things-

1. जन्म से पहले या गर्भावस्था के दौरान रोकथाम संबंधी पीडियाट्रिक्स (Antenatal preventive pediatrics)

2. जन्म के बाद रोकथाम संबंधी पीडियाट्रिक्स (Postnatal preventive pediatrics)

1. गर्भावस्था के दौरान रोकथाम संबंधी पीडियाट्रिक्स (Antenatal preventive pediatrics) -

गर्भावस्था के दौरान रोकथाम संबंधी पीडियाट्रिक निम्न प्रकार से होने चाहिए-

during pregnancy, Pediatric preventive measures should be as follows:

(a) गर्भवती महिलाओं को पर्याप्त पोषण उपलब्ध कराना।

(b) संक्रामक बीमारियों (infectious disease) की रोकथाम करना।

(c) प्रसव प्रक्रिया के बारे में माँ को शिक्षित करना और उसे तैयार करना।

(d) माँ को स्तनपान का महत्व समझाना।

(a) To provide adequate nutrition to pregnant women.

nursinggyan.com

(b) To prevent infectious diseases.

(c) Educating and preparing the mother about the delivery process.

(d) To explain the importance of breastfeeding to the mother.

2. जन्म के पश्चात रोकथाम संबंधी पीडियाट्रिक्स

(Postnatal preventive pediatrics)

जन्म के पश्चात शिशु की पीडियाट्रिक्स निम्न प्रकार से की जानी चाहिए-

Pediatrics of the baby after birth should be done in the following manner -

(a) शिशुओं का चिकित्सीय परीक्षण (medical test) एक निश्चित समय पर कराया जाना चाहिए।

(b) बच्चों में सही समय पर टीकाकरण करना।

(c) अपघातों की रोकथाम करना।

(d) मनोवैज्ञानिक निगरानी करना।

(a) Medical test of infants should be done at a fixed time.

(b) To vaccinate children at the right time.

(c) To prevent accidents.

(d) To carry out psychological monitoring.

nursinggyan.com

Q. जीवनाक को परिभाषित कीजिए। भारत सरकार के अनुसार बाल स्वास्थ्य से संबंधित जीवनांक का वर्णन कीजिए।

Define vital statistics. Describe child health care statistics according to Government of India.

उत्तर- जीवनांक (Vital Statistics)-

जन्म, मृत्यु से संबंधित आंकड़े जीवनांक कहलाते हैं अथवा जन्म, मृत्यु और विवाह से संबंधित साख्यिकीय आंकड़ों को ही जीवनांक (vital statistics) कहते हैं। कुछ महत्वपूर्ण जीवनांक आंकड़े निम्नलिखित हैं-

Data related to birth and death are called vital statistics or statistical data related to birth, death and marriage are called vital statistics. Some important vital statistics are as follows-

- जन्मदर (Birth Rate)
- मृत्युदर (Death Rate)
- विशिष्ट मृत्युदर (Specific Death Rate)
- बाल मृत्युदर (Child Death Rate)
- नवजात शिशु मृत्युदर (Neonatal Mortality Rate)
- जन्म के दौरान मृत्युदर (Perinatal Mortality Rate)
- पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु दर (Mortality Rate under five year age)
- मातृ मृत्युदर (Maternal Mortality Rate)
- जीवन की आशा (Expectancy of Life)
- सामान्य जनन क्षमता की दरें (Rate of General Reproductive Capacity)

nursingguar.com

- Birth Rate
- Death Rate
- Specific Death Rate
- Child Death Rate
- Neonatal Mortality Rate
- Perinatal Mortality Rate
- Mortality rate under five years of age
- Maternal Mortality Rate
- Expectancy of Life
- Rates of General Reproductive Capacity

जन्मदर (Birth Rate) -

वर्ष के मध्य में आँकलन (assess) की गई जनसंख्या में से एक वर्ष में जीवित पैदा होने वाले बच्चों की संख्या ही जन्मदर कहलाती है।

2017 के आंकड़ों के अनुसार भारत में जन्मदर 19 प्रति 1000 जनसंख्या है।

The number of children born alive in a year out of the population assessed in the middle of the year is called birth rate.

According to 2017 data, the birth rate in India is 19 per 1000 population.

मृत्युदर (Death Rate)

nursingguyan.com

वर्ष के मध्य में आंकलित प्रति एक हजार की जनसंख्या में से एक वर्ष में होने वाली मौतों की संख्या मृत्यु दर कहलाती है। 2017 में भारत में मृत्युदर 7.3 प्रति 1000 जनसंख्या है।

The number of deaths in a year out of every one thousand population assessed in the middle of the year is called death rate. The death rate in India in 2017 is 7.3 per 1000 population.

जीवनांकों के उपयोग (Uses of Vital Statistics)

जीवनांकों के मुख्य उपयोग निम्नलिखित हैं-

Following are the main uses of vital statistics:

1. योजना एवं स्वास्थ्य प्रशासन के लिए।

2. समुदाय की स्वास्थ्य सस्याओं, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य एवं अनुसंधान के लिए।

3. समुदाय की स्वास्थ्य स्थिति को ज्ञात करना तथा उसकी स्वास्थ्य समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पहचान करने के लिए।

1. For planning and health administration.

2. For community health issues, maternal and child health and research.

3. To know the health status of the community and to identify its health problems and needs.

nursingyan.com

जीवनांकों के स्त्रोत (Sources of vital statistics) -

जीवनांकों के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं-

Following are the main sources of vital statistics –

1. जनगणना
2. जन्म, मृत्यु एवं विवाह का पंजीकरण।
3. संक्रामक बीमारियों की अधिसूचना जारी करना।
4. प्रत्येक क्षेत्र में एक निश्चित समय अंतराल से स्वास्थ्य सर्वे करवाना।
5. अस्पतालों एवं स्वास्थ्य केन्द्रों के रिकार्ड का संधारण करना।

1. Census
2. Registration of birth, death and marriage.
3. Issuing notification of infectious diseases.
4. To conduct health survey in every area at a fixed time interval.
5. Maintaining records of hospitals and health centres.

Q. पीडियाट्रिक नर्सिंग की आधुनिक अवधारणा

(Modern Concept of Paediatric Nursing) -

आजकल नर्सिंग की तकनीकों में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं जिसके कारण चाइल्ड केयर की अवधारणा में भी परिवर्तन करने की आवश्यकता हुई है, भारत में सबसे अधिक शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्युदर देखने को मिलती है, जिसे रोका जा सकता है।

Nowadays, there are continuous changes in the techniques of

nursingyan.com

nursing, due to which there is a need to change the concept of child care, India has seen the highest infant mortality rate and maternal mortality rate. Which can be prevented.

पीडियाट्रिक नर्सिंग के लक्ष्य (Goals of Paediatric Nursing) -

इसके मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

Its main goals are as follows-

1. बच्चों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास में वृद्धि करना।

2. बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि करना, जिससे बच्चे अपनी शारीरिक क्षमता का उपयोग कर सकें।

3. नर्स माता-पिता और शिशु में होने वाली मानसिक आघात को कम कर सकती है।

4. यदि किसी शिशु (infant) के जबड़े में चोट या अस्थिभंग हो गया है, तो ऐसी अवस्था में उसको आहार (feeding) में अधिक कठिनाई होती है ऐसी अवस्था में नर्स बहुत मदद करती है।

5. नर्सिंग केयर (nursing care) प्रदान करने के लिए नर्स को मरीज की बीमारी का ज्ञान होना चाहिए।

6. नर्स को मेडिकल सर्जिकल तकनीक बीमारी व उपचार का नियंत्रण (prevention of illness and therapy) का भी ज्ञान होना आवयश्यक है।

7. नर्स में मरीज का निर्धारण (assessment) करने की भी योग्यता होनी चाहिए, जिससे मरीज को ठीक प्रकार से नर्सिंग केयर मिल सके।

8. नर्स को बच्चे की बीमारी (illness) उसकी क्षमता (strength) और कमजोरी (weakness), उपचार आदि का निरंतर व सतत् निरीक्षण (observation) करना चाहिए।

nursingujan.com

9. जो नर्स बच्चे की देखभाल कर रही है उसे जिम्मेदारी (sense of responsibility) का आभास होना चाहिए।

10. नर्स में बच्चों की प्रक्रिया (reaction and response) के बेहतर निर्णय (judgement) करने की योग्यता भी होनी चाहिए।

1. To increase the health and physical development of children.

2. To increase the physical and mental health of children, so that children can utilize their physical abilities.

3. The nurse can reduce mental trauma in the parents and the child.

4. If an infant has an injury or fracture in his jaw, then in such a situation he faces more difficulty in feeding. In such a situation, the nurse helps a lot.

5. To provide nursing care, the nurse must have knowledge of the patient's illness.

6. It is necessary for the nurse to have knowledge of medical surgical techniques, prevention of illness and therapy.

7. The nurse should also have the ability to assess the patient, so that the patient can get proper nursing care.

8. The nurse should continuously observe the child's illness, strength and weakness, treatment etc.

9. The nurse who is taking care of the child should have a sense of responsibility.

nursinggyan.com

10. The nurse should also have the ability to make better judgments about the reaction and response of children.

nursinggyan.com